उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का एक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉ० ऑफ फिलॉसफी (पी.एच -डी.) उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोधकार्य की शोध संक्षेपिका

2024

पर्यवेक्षक

डॉ मो. आफाक हाशमी

एसोशिएट प्रोफेसर
डॉ ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
लहेरियासराय, दरभंगा , बिहार

DR. M. AFAQUE HASHMI

शोधकर्त्ता

प्रियंका भारती

PAT ROLL- 22060328
Class Roll - 30

Scanned with OKEN Scanner

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का एक अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक प्रकार को प्रकाशित करती है, उनके सामाजिक गुणों का विकास करती है, मानवीय मूल्यों को महसूस करने का अवसर प्रदान करती है, और उनके आत्मविश्वास का मार्ग सुझाती है। शिक्षा द्वारा ऐसे वातावरण की सृजना करनी चाहिए जो व्यक्ति के प्राकृतिक प्रतिभाओं का पूरा विकास करने और प्रगति करने की संभावना प्रदान करे।

इस काम को करने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सफलता कम हो रही है। इस परिणामस्वरूप, इस शिक्षा प्रणाली से बहुतों को असंतोष है। शिक्षा के क्षेत्र में चर्चाओं में अधिकांश लोग निराश नहीं हैं, बल्कि क्रोधित भी हैं।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विस्तार विशेष गति से हुआ है, माध्यमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयों तक के सभी स्तरों की शिक्षा संस्थाओं में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप प्रमाणपत्र और डिग्री धारकों की संख्या में अचानक वृद्धि हुई है। हालांकि, ये परिणाम असली गुणवत्ता और संतोष को आवश्यक रूप से प्रकट नहीं करते। आजकल, समाज से अलगाव की भावना, आत्म-आत्मविश्वास में कमी, और अनैतिक व्यवहार के प्रचलन के कारण छात्रों के जीवन में प्रवृत्त हो गई है। वास्तव में, आज के लिए आवश्यक है कि छात्र सामाजिक, आत्म-विश्वासी, सोचने-समझने और आचार-विचार के क्षेत्र में संस्कारित और उच्च स्तर के प्रतिनिधित्व वाले शिक्षित व्यक्तियों में रूप ले, और वे श्रेष्ठ मानवीय गुणों का प्रतीक्षित करें, नैत िकता के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करें, और आत्म-विश्वास, लोकतंत्रिक आचार, उदारता, धर्मिकता, और विचारशीलता की उच्चता को बढ़ावा दें।

Scanned with OKEN Scanner

इस सब के लिए, वर्तमान की किशोरावस्था बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, आज के किशोर छात्रों के व्यक्तिगतित्व पर शोधार्थियों का ध्यान स्वाभाविक है।मानव जीवन के विकास के अवस्थाओं में किशोरावस्था का स्थान सर्वोपरि है। यह जीवन का सबसे कठिन काल है यह समय बाल्यावस्था तथा प्रौढावस्था के मध्य का संधिकाल (Transitional Period) है अर्थात बालक दोनों अवस्थाओं में रहता है। अतः उसे न तो बालक समझा जाता है और न प्रौढ़ इस परिवर्तनकाल में माता-पिता अभिभावक, शिक्षक तथा अन्य लोग जो कि बालक के वर्तमान तथा भविष्य के कल्याण में रुचि रखते हैं और समाज की प्रगति चाहते हैं उन सबको किशोरों के स्वास्थ्य विकास पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए जैसा कि क्रो और क्रो ने कहा है 'किशोर ही वर्तमान की शक्ति और मावी आशा को प्रस्तुत करता है।" इसी प्रकार स्टैनले हॉल ने किशोरावस्था को बड़े संघर्ष, तनाव तूफान तथा विरोध की अवस्था बताया है।"

अतः स्पष्ट है कि अभिभावकों तथा शिक्षकों को विकासमान (Growing) किशोरों की प्रमुख विशेषताओं, आवश्यकताओं, रुचियों तथा विकास की सम्भावित शक्तियों के विषय में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए ताकि वे उनके विकास में समुचित योग दे सकें। शैक्षिक तथा शोध की दृष्टि से किशोरावस्था के महत्व पर इंग्लैण्ड की हैडो कमेटी रिपोर्ट (Hadow Commeittee Report) में लिखा गया है ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आरम्भ हो जाता है। इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस ज्वार का बाढ़ के समय ही उपयोग कर लिया जाये एवं इसकी शक्ति और धारा के साथ-साथ नयी यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।

विद्यालयों में इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थी उत्तर किशोरावस्था में होते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों से सम्बन्धित अनुशासन की समस्या ने एक व्यापक रूप धारण कर लिया है। अतः इन किशोरों को शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक शक्तियों को उचित दिशा देने के लिए तथा उनकी शिक्षा को निर्धारित करने के लिए उनके व्यक्तित्व निर्माणक तत्वों सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा आदि का विस्तृत अध्ययन आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं चूंकि किशारावस्था जीवन का सबसे कठिन और नाजुक समय है। इस समय किशोर-किशोरियों में शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कान्तिकारी परिवर्तन होते हैं इसी अवस्था में अच्छा या बुरा देश प्रेमी व देश द्रोही धार्मिक या अधार्मिक, परिश्रमी या अकर्मण्य,

Scanned with OKEN Scanner

सभ्य, शिष्ट व सामाजिक या असम्य, अशिष्ट, असामाजिक आदि बन सकता है अतः इन किशोर को उचित मार्ग दर्शन करना अनिवार्य है। चूंकि यह काल व्यक्तित्व निर्माण का काल है। अतः यह कार्य शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए किशोर के भावी जीवन के निर्माण में माता-पिता, अभिभावको शिक्षकों तथा शोधकर्ताओं का उनके लिए उपयुक्त एवं सुनियोजित शिक्षा की व्यवस्था करना परम कर्तव्य है। इस सम्बन्ध में वैलेन्टाइन का यह वाक्य उल्लेखनीय है, "मनोविज्ञानिकों द्वारा बहुत समय तक उपदेश दिये जाने के बाद अन्त में यह बात व्यापक रूप से स्वीकार की जाने लगी है कि शैक्षिक दृष्टि से किशोरावस्था का अत्यधिक महत्व है। यही कारण है कि आज किशोरावस्था शोधकर्ताओं को अपनी ओर निरन्तर आकृष्ट कर रही है।

जन्म के समय शिशु न सामाजिक होता है न असामाजिक, वरन् वह सामाज के प्रति उदासीन रहता है। जब आयु बढ़ती है, तो वह सामाजिक गुणों से सुसज्जित होता है, और कुछ वर्षों के बाद, वह सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है। व्यक्ति जिस समय और परिस्थितियों में रहता है, उसमें उसे समायोजन करना होता है। इसलिए, आजकल शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास को भी अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, खासकर किशोरावस्था में, क्योंकि इस अवधि में बच्चों का शैक्षिक विकास भी होता है। जब एक बच्चा सामाजिक रूप से परिपक्व हो जाता है, तो वह समाज में अपनी स्थान को ढूंढने में सक्षम होता है। अध्ययन और शोध से प्राप्त डेटा दिखाता है कि वे बच्चे जिनमें सामाजिक परिपक्वता अधिक होती है, वे अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं। इसलिए, छात्रों में सामाजिक परिपक्वता का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन सामाजिक परिपक्वता की मूल योग्यताएँ और क्षमताएँ तभी मान्य होती हैं, जब वे सही तरीके से प्रयोग हो। इन क्षमताओं को आत्मविश्वास कहा जाता है, और यह आत्मविश्वास ही व्यक्ति को अपने लिए और समाज के लिए साकारी कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। आत्मविश्वास, डर, गुस्सा आदि से भिन्न है, और जन्म समय ही व्यक्ति के पास नहीं होता। लेकिन धीरे-धीरे, व्यक्ति अपनी गुणों के साथ आत्मविश्वास का विकास करता है।आत्मविश्वास के साथ कार्य करने पर यदि व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। तो वह कुण्ठित हो जाता है। कुण्ठा व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के दुश्चिन्ता, डर, क्रोध जैसी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व में नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो जाते हैं जो उसके

Scanned with OKEN Scanner

स्वयं विद्यालय तथा समाज के लिए घातक है। सामान्यतया कुण्ठा का जन्म विपरीत शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक, परिवारिक तथा आर्थिक पर्यावरणीय कारणों से होता है।

आज की बदलती परिस्थितियों में छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में कुण्ठा के शिकार हो जाते हैं। जिसके कारण उनके विकास एवं समायोजन में बाधा उत्पन्न होती है। किशोरवय में अनुशासनहीनता की समस्या भी कुण्ठा के कारण ही उत्पन्न होती है। अपराध प्रवृत्ति का विकास भी इसी काल में होता है। जैसा कि वैलेनटाइन का विचार है- 'किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है, पक्के अपराधियों की एक विशाल संख्या किशोरावस्था में ही अपने व्यवसायिक जीवन गंभीरता पूर्वक आरम्भ करती है।

अतः विद्यालय तथा परिवार में छात्र-छात्राओं को ऐसा शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण दिया जाए ताकि उनमें जिम्मेदारी, आत्मविश्वास एवं सामाजिक परिपक्वता का विकास हो सके तथा कुण्ठा उत्पन्न न हो वे अपराध जगत में प्रवेश न कर सकें।

पूर्व शैक्षिक अध्ययनों अनुसंधानों में यह पाया गया है कि जिन बालकों में सामाजिक परिपक्वता अधिक होती है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है। अतः छात्रों का सामाजिक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है। आज के बदलते समाज में बहुत से युवा छात्र-छात्राएं विभिन्न प्रकार की असफलताओं के कारण अपना मानसिक संतुलन खो रहे है। वे निराशवादी दृष्टिकोण के कारण कुण्ठा का शिकार होकर गलत रास्तों पर चल पड़ते है। इसी कारण समाज में वे अपनी विश्वासनीयता खो रहे हैं उनके आत्मविश्वास में कमी आने लगती है तथा उन्हें अपनी क्षमताओं का बोध नहीं हो पाता और धीरे-धीरे क्षीण व्यक्तित्व वाले हो जाते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की आयु 15 से 18 वर्ष होती है। इस आयु वर्ग में विद्यार्थियों में लगभग सभी मनोविज्ञानिक एवं प्राकृतिक क्षमताओं का विकास पूर्णता की ओर होता है साथ ही उनका शैक्षिक रूप से भी इतना विकास हो जाता है कि वह अपनी क्षमताओं एवं संसाधनों के आधार पर अपने भविष्य की दिशा तय कर सकें तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन की जिम्मेदारी ले सकें किन्तु यह तभी सम्भव है, जब किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित हो इसके लिए इस स्तर के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विभिन्न निर्माणक तत्वों के साथ उनकी सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास तथा कुण्ठा के जन्मने के कारणों का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के अन्तर्सम्बन्धों का सम्यक ज्ञान हमें हो जैसाकि ब्लेयर जोन्स व सिम्पसन ने विचार व्यक्त किया है:- किशोर की

Scanned with OKEN Scanner

कुछ विशिष्ट समस्यायें होती हैं। यदि शिक्षक एवं अभिभावक किशोरों की वयस्कावस्था में सरलतापूर्वक प्रवेश करने में सहायता देना चाहते हैं तो उनको समान रूप से किशोरों की अनोखी समस्याओं के स्वरूप से अवगत होना चाहिए इस कार्य के लिए आधारभूत व्यवहार सिद्वान्त किशोरावस्था एवं प्रत्येक किशोर से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान का होना पहली शर्त है।

ऐसी स्थिति में किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को जान समझकर ही हम उनकी रुचियों, कल्पनाओं, दिवास्वप्नों तथा भावुकता का लाभ उठाकर उन्हें साहित्य संगीत कला तथा वैज्ञानिक शोध कार्यों में लगाया जा सकता है। तभी वर्तमान समय की समस्याओं का निराकरण सम्भव हो सकेगा।

अतः शैक्षिक क्षेत्र के लिए नीति-निर्धारण, पाठ्यक्रम संरचना, विद्यालय वातावरण के सर्जन आदि की दृष्टि से यह आवश्यक है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक परिपक्वता आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का अध्ययन कर प्राप्त परिणामों का शिक्षा के विकास व परिवर्तन के लिए सार्थक आधार खोजे जाएं ऐसी स्थिति में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सह-सम्बन्धित है? इस सह-सम्बन्ध की मात्रा आकार-प्रकार क्या है? विभिन्न कारक एक दूसरे को किस आधार पर प्रभावित करता है? यह जानना शिक्षक तथा शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य हो जाता है।

पाश्चात्य देशों में किशोरवय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं तथा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति विषयक अनेकों अनुसंधान हुए हैं किन्तु भारत में इस दिशा में बहुत कम अध्ययन हुआ है जो न के बराबर है। इसी अभाव की अनुपूर्ति में प्रस्तुत अध्ययन एक संक्षिप्त प्रयास है। विशेषतया उत्तर प्रदेश के कानपुर मंडल में इस प्रकार का कोई अध्ययन नहीं हुआ है यह कार्य इस दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इन्हीं सब अपेक्षाओं, कारणों के दृष्टिगत शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का एक अध्ययन शोध समस्या के रूप में चुना।

Scanned with OKEN Scanner

संबन्धित साहित्य का अध्ययन

रेड्डी, रामना आई0वी0, (1974) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विद्धतापूर्ण प्राप्ति तथा शैक्षिक समायोजन में सम्बन्ध का एक देशान्तरीय अध्ययन किया। उद्देश्य - (0) विद्वतापूर्ण संपादन के साथ शैक्षिक समायोजन के सम्बन्ध का पता लगाना। (6) ऐसे लोगों के शैक्षिक समायोजन का पता लगाना जो विद्धतापूर्ण सम्पादन के उच्च स्तरों को प्राप्त करते हैं। निष्कर्षतः शैक्षिक समायोजन विद्धतापूर्ण सम्पादन के साथ विख्यात रूप से सम्बन्धित था। मानसिक योग्यता और विद्धतापूर्ण प्राप्तियाँ केवल औसत रूप से ही सम्बन्धित थे। विद्वतापूर्ण सम्पादन और स्थान असम्बन्धित थे। शहरी, आधे- शहरी एवं ग्रामीण तीनों क्षेत्रों के विषयों ने शैक्षिक कार्य संसार से तुलना करके अपना समायोजन किया। विद्वतापूर्ण सम्पादन एवं शैक्षिक समायोजन के सम्बन्ध में शहरी आधे-शहरी तथा ग्रामीण स्थानों के विषयों के बीच कोई अन्तर नहीं था। आत्म-प्रशिक्षण, प्राप्ति, अभिभावकों, अध्यापकों एवं साथियों के प्रति बर्ताव शैक्षिक समायोजन के साथ सकारात्मक पाया गया। सामाजिक, आर्थिक स्तर परिवार की प्रकृति, जीवन का उद्देश्य का विद्वतापूर्ण सम्पादन के साथ महत्वपूर्ण या विख्यात सम्बन्ध नहीं था।

रिचर्ड्स (1975) ने निम्न एवं उच्च संघर्ष वाले समूहों के लोगों में उनके शैक्षिक प्रगति एवं शिक्षण से जुड़ी संस्तुष्टि के साथ कम संघर्ष वाले समूह के लिए संतोष के स्तर में एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अन्तर पाया।"

जॉनसन (1978) ने दो प्रकार के विद्यालय संगठनों के साथ नौकरी से जुडी संतुष्टि व आत्म-प्रसन्नता के पारस्परिक अध्ययन में दोनों समूहों के बीच नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि के स्तरों में सांख्यिकीय अन्तर पाया। स्कूल के अलग-अलग समूहों के अध्यापकों ने अपने ही साथ दूसरी कक्षाओं में कार्यरत अध्यापकों की तुलना में नौकरी के प्रति अधिक संतुष्टि व आत्म प्रसन्नता दिखाई।

गोयल, छाया (1988) ने लक्ष्य कुण्ठा, और समायोजन का सीखने और निष्पत्ति की गति के साथ पारस्परिक अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य शिक्षा एवं किशोरियों के संपादन की गति पर लक्ष्य, कुण्ठा के तरीके एवं प्रबन्ध के विभिन्न क्षेत्रों पर स्वतन्त्र या प्रत्यक्ष

Scanned with OKEN Scanner

प्रभाव और विभिन्न स्तरों पर पारस्परिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में उद्दण्डता एवं भावात्मक समायोजन के अलावा समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों एवं कुण्ठा के विभिन्न तरीकों के मध्य पारस्परिक क्रिया महत्वपूर्ण थी। लक्ष्य समायोजन एवं कुण्ठा ने आपस में अन्तर्क्रिया दिखाई और किशोरियों की शिक्षा एवं संपादन की गति को प्रभावित किया। लक्ष्य समायोजन, पदत्याग और अवनति के निम्न स्तर एवं दृढ़ता और समायोजन के उच्च स्तरों ने शिक्षा एवं संपादन की गति को सुगम बनाया।

श्रीवास्तव, एन0 (1988) ने किशोर और किशोरियों के आत्मविचार प्राप्तियों, अभिप्रेरणा और प्रस्तुतीकरण से उनके आक्रामकता (उद्दण्डता) के सम्बन्ध का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य अभिप्रेरणा प्राप्ति एवं आत्मविचार के प्रभाव एवं उद्दण्डता के साथ उनके पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन करना था। प्रमुख प्राप्तियों में उद्दण्डता का आत्म-विचार, अभिप्रेरणा प्राप्ति तथा संपादन (दोनों शैक्षिक व अशैक्षिक) के साथ पारस्परिक सम्बन्ध नहीं था, जबकि उद्दण्डता का आत्म-विचार एवं शैक्षिक अशैक्षिक संपादन के साथ एक टेढ़ा सम्बन्ध था, लेकिन उद्दण्डता एवं अभिप्रेरणा प्राप्ति के बीच ऐसा कोई पारस्पारिक सम्बन्ध नहीं पाया गया। बालिकाओं ने अभिप्रेरणा प्राप्ति एवं उददण्डता के बीच एक टेढा सम्बन्ध दिखाया जबकि बालकों ने इन दोनों कारकों (चरों) के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं दिखाया। "

महादिक, अरुन कुमार (1988) ने निराशा, मूल्य व्यवस्था और शब्दों के प्रकार धारण शक्ति के निर्णायक की तरह होते हैं, का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य धारण शक्ति पर प्रेरित निराशा, मूल्य विन्यास एवं मौखिक पदार्थ मतलब शब्दों के प्रकार को सम्बन्धित प्रभावों का अध्ययन करना। अधिक विशिष्ट रूप से यह निराश्रित एवं अशिक्षित स्थिति के तहत अलग-अलग गुणों की दिशा के विषय के द्वारा मनुष्य के अलग-अलग गुणों की धारण शक्ति की प्रक्रिया का विश्लेषण करने की ओर उद्देश्य रखता है। प्रमुख प्राप्तियों में अलग-अलग मूल्य की दिशा वाले विषय अपने अलग-अलग महत्व वाले शब्दों की धारण शक्ति के सम्बन्ध में भिन्न थे। मूल्यवान स्मृति, अमूल्यवान स्मृति से अधिक उच्च पायी गयी। मूल्यों के उच्च एवं निम्न योग समान गुणों से सम्बन्धित शब्दों की धारण शक्ति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थे। प्रायोगिक रूप से उत्पन्न की गयी निराशा ने धारण शक्ति में अधिक रुकावट डाली. लेकिन निराशा के वर्तमान स्तर ने धारण शक्ति को अधिक प्रभावित नहीं किया। मूल्य (गुण) की दिशा के संयुक्त प्रभाव एवं प्रेरित की गयी निराशा ने महत्वपूर्ण प्रभाव को उत्पन्न नहीं किया लेकिन मूल्य की दिशा के मान

Scanned with OKEN Scanner

या प्रकार के सम्बन्ध में धारण शक्ति पर निराशा के बर्ताव का प्रभाव महत्वपूर्ण नहीं पाया गया था

जलरिया, रीता (1989) ने व्यक्तित्व सृजनात्मकता और कुण्ठा के मनोवृत्ति उत्पाद और प्रक्रिया का अध्ययन किया जिसका उद्देश्य मनोवृत्ति का व्यक्तित्व रचना एवं निराशा की प्रक्रिया और उत्पाद की तरह परीक्षण करना तथा मनोवृत्ति पर उनके व्यक्तित्व, रचना एवं निराशा के बीच पारस्परिक प्रभाव को देखना था प्रमुख प्राप्तियों में किशोरों में मनोवृत्ति का उत्पाद व्यक्तित्व की प्रक्रिया, सृजनात्मकता और निराशा से अधिक था। मनोवृत्ति एवं निराशा की दृढ़ता के बीच पारस्परिक निर्भरता पायी गयी भावुकता की कमी, अहंकार, आत्म-भावकुता, समाकलन, प्रबलता, सामाजिक साहस के साथ मनोवृत्ति के लगाव ने दिखाया कि इसका अपना व्यक्तित्व था। इस व्यक्तित्व निराशा को रूपरेखा में रचना, मनोवृत्ति के साथ उच्च स्पर्श (सम्बन्ध) दिखाया है।

सोमर्स, पी०सी०, (1992) ने उपलब्धि एवं लिंग के पहचान की आवश्यकता एवं महिला स्नातक विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव की जाँच की, जिन्होंने प्रबल पुरुषों एवं महिलाओं के भविष्य से जुड़े कार्यक्रमों को दर्ज करने का चयन किया है। खोज यह दिखाती है. कि प्राप्त करने की आवश्यकता दोनों ही समूहों की महिलाओं में अधिक थी और प्रबल पुरुषों के क्षेत्रों में प्रवेश लेने वाली तथा प्रबल महित्रओं के क्षेत्रों में प्रवेश लेने का चयन करने वाली महिलाओं में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था। प्रबल पुरुषों के क्षेत्रों के लिए तैयार विषयों पुरुषोचित एवं नर सम्बन्धी पहचान विख्यात या महत्वपूर्ण थी एवं प्रबल महिला स्नातक कार्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले लोगों के लिंग की पहचान में एक महत्वपूर्ण अन्तर प्रकट किया।"

अरोड़ा, समृद्धि मार्या, एनड्रावी और शर्मा, नीरा ने सन् 2004 में किशोरावस्था में होने वाली दुर्बलताओं से जुड़ी सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा का अध्ययन किया। इन्होंने वाक्य पूर्ति जाँच मूल्य प्राप्ति एवं संपत्ति सूची क्रोध का उपयोग किया। परिणामों ने यह प्रकट किया कि दुर्बल किशोर अपने परिवार अध्यापक और अपने समान व्यक्तियों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध रखते है, लेकिन दूसरे लिंग के सदस्यों के साथ मित्रता देखने को नहीं मिलती है। इनमें से अधिकतम लोग उच्च मूल्य प्राप्ति रखते हैं और अधिक विद्यालय संपादन दिखाते हैं। जाँच की व्याख्या यह प्रकट करती है यद्यपि इन दुर्बल किशोरों के पास उच्च मूल्य प्राप्ति है परन्तु उनमें लक्ष्य की कमी

Scanned with OKEN Scanner

और इसका कारण उनके अन्दर संसार के विषय में कम जानकारी तथा जिन्दगी जीने के कम मौके हैं।

उपाध्याय, हिमानी और भल्ला, डिम्पल ने 2006 में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों में आत्म-विचार का विकास आत्मविश्वास निराशा और वंचितता में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शारीरिक रूप से अक्षम लोगों में आत्म-विचार का विकास आत्मविश्वास निराशा और वंचितता में शिक्षा की भूमिका के विषय में जानना था। अध्ययन के नमूने में दो समुदायों से 43 शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को रखा गया है और पुनर्वासिन केन्द्र तथा हवाबांध वूमेन्स कॉलेज से स्नातक एवं नान स्नातक व्यक्तियों को रखा गया है। उद्देश्य के लिए आत्म-विचार, आत्मविश्वास, निराशा एवं वंचितता विषय वस्तु थे। परिणाम यह प्रकट करता है कि शिक्षा का शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों और निराशा व वंचितता को कम करने में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है। "

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का एक अध्ययन"

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास, और कुण्ठा उनके शैक्षिक उपलब्धियों के साथ मजबूत एक संबंध बनाता है। एक अध्ययन द्वारा प्रमाणित होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के माध्यम से उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार होता है। जब विद्यार्थी सामाजिक दृष्टि से सुदृढ़ होते हैं, तो वे समाज में अधिक सहयोगी और सक्रिय बनते हैं, जिससे उनकी शिक्षा में भी सुधार होती है। विद्यार्थी अपने कौशलों और प्रतिभा से जुड़े अधिक महसूस करते हैं और यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है। वे अपने कुण्ठा को पार करने के लिए तैयार होते हैं और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिपक्वता विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक परिपक्वता के साथ ही, विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। यह उन्हें उनके कौशलों और क्षमताओं के प्रति अधिक आत्म-संवाद की संभावना

Scanned with OKEN Scanner

देता है, जिससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार होता है। आत्मविश्वास उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के दिशा में मजबूती प्रदान करता है, जिससे वे स्वानुभव और सफलता का अधिक अवसर प्राप्त करते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता और आत्मविश्वास, उनके शैक्षिक उपलब्धियों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के सामाजिक और आत्मिक विकास को साथ में सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक प्रयासों में समाहित होना चाहिए। वर्तमान शोध का उद्देशय किशोरों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास, एवं कुंठा का अध्ययन कर उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को सही दिशा प्रदान करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं कुण्ठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन किया जाएगा, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य है-

1.उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध को ज्ञात करना।

2। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध को ज्ञात करना।

3 . उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कुण्ठा के स्तर का उनकीं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध को ज्ञात करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक परिपक्वता आत्मविश्वास व कुण्ठा में बहु सह-सम्बन्ध ज्ञात करना।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास, और कुण्ठाचरों (परिमाणिक) के साथ संबंधित प्रतीपगमन समीकरण को विकसित करने के लिए कोशिश करना है।

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन की परिकल्पनाएं

अनुसंधान के सोपान में समस्या के कथन के तुरन्त बाद एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है। परिकल्पना के अभाव में प्रायः वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं हैं इसका कारण यह है कि समस्या का स्वरूप अधिकतर अत्यधिक विषम विस्तृत तथा विसरित (Diffused) रहता है। ऐसी स्थिति में उसके व्यापक क्षेत्र को न्यून करना अत्यन्त आवश्यक होता है जिससे अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट सूक्ष्म तथा गहन हो सके। प्रस्तुत अध्ययन को सुव्यवस्थित तार्किक व लक्ष्योन्मुख बनाकर उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएं निर्मित की गयी है-

H1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह-सम्बन्ध है।

H2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह-सम्बन्ध है।

H3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कुण्ठा के स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह-सम्बन्ध है।

H4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक परिपक्वता आत्मविश्वास व कुण्ठा में सार्थक बहु सह-सम्बन्ध है।

H5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास व कुण्ठा चरों की सहायता से पूर्व कथन करने के लिए विकसित प्रतीपगमन समीकरण सार्थक होंगे।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ तथा परिभाषा निम्नलिखित है-

उच्च माध्यमिक स्तर

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर का अर्थ कक्षा 11एवं 12 से है।

Scanned with OKEN Scanner

सामजिक परिपक्कता

डॉल (1936) के अनुसार सामाजिक परिपक्कता के सामाजिक योग्यता से जुड़े आत्म-पर्याप्ति, व्यावसायिक क्रियाकलाप संचार माध्यम, आत्म नियंत्रण एवं सामाजिक सहभागिता जैसे कई गुण है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्कता का तात्पर्य बालक के सामाजिक विकास की पूर्णता से है। सामाजिक रूप से परिपक्क व्यक्ति ही समाज में अपना समायोजन कर पाते हैं तथा सामाजिक सम्बन्धों का यथोचित निर्वहन करने में सक्षम होते है।

आत्मविश्वास

बसवाना (1975) के अनुसार साधारण शब्दों में आत्मविश्वास मनुष्य को किसी परिस्थिति में बाधाओं को वश में करने और चीजों को फिर से ठीक करने की योग्यता से सम्बन्धित इस अध्ययन में आत्मविश्वास व्यक्ति के और किसी पर झुके बिना परिस्थितियों को सफलतापूर्वक संभालने और एक सकारात्मक आत्ममूल्यांकन की सोच रखने से सम्बन्धित है ।

कुण्ठा

स्टैगनर (1961) के अनुसार, "कुण्ठा भावुक तनाव की एक दशा है, जिसका चरित्र-चित्रण गुस्सा, तकलीफ एवं घबडाहट के द्वारा किया जाता है। उद्देश्य को प्राप्त करने के बर्ताव में विघ्न आने से निराशा होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में कुण्ठा का तात्पर्य व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति और भावात्मक दशा है, जो उसे अनेक अवरोध और परस्पर विरोधी विकल्पों का सामना करने पर प्राप्त होती है। कुण्ठा व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के दुश्चिता, डर, क्रोध जैसी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कुण्ठा वह तीव्र मानसिक अनुभूति है जो व्यक्ति को असंतुष्ट या असफल होने पर होती है।

शौक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक निष्पत्ति का अर्थ विद्यालय में एक विशेष प्रकार की उद्देश्यपरक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बालक द्वारा विभिन्न विषयों में प्राप्त ज्ञान तथा अनुभव है साथ ही यह ज्ञान व अनुभव प्राप्ति की सीमा को भी दर्शाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी ने क्या सीखा है और उसकी मात्रा क्या है ?

Scanned with OKEN Scanner

शोध विधि

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु शोधकर्त्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। क्योंकि शोध के स्वतंत्र व आश्रित चरों तथा समस्या को ध्यान में रखते हुए यह विधि सर्वोत्तम है। वेर्तमान शोध चूंकि एक सर्वेक्षण शोध है जिसके लिए प्रथम आंकड़ों का चयन कर उसका संख्याकिक विश्लेषण कर शोध के निष्कर्ष तक पहुंचा जा सकता है। तथा इस कार्य हेतु सम्पूर्ण जनसंख्या से न्यादर्श चुन कर सूचना प्राप्त की जाए गी।

अध्ययन की सीमायें

प्रत्येक शोधार्थी की अपनी सामर्थ्य होती है। उसी के अनुरूप वह अपने शोध को अंजाम तक ले जा सकता है अध्ययन विषय की भी अपनी विशेषतायें होती है। इसीलिए प्रत्येक शोधकर्ता अपनी धन, समय आदि की सीमाओं तथा अध्ययन के लिए उपलब्ध संसाधनों के आधार पर शोध का सीमांकन करता है। अतः शोधकर्ता ने भी समय तथा साधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएं निर्धारित की। जो निम्नलिखित है -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बेतिया ज़िला में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को न्यादर्श रूप में चुना जाएगा ।

प्रस्तुत शोध बिहार के बेतिया ज़िला के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श रूप में चयनित किया जाएगा ।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कूल 800 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया जाएगा । विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया जाएगा जिसमें 400 विज्ञान वर्ग तथा 400 विद्यार्थी कला वर्ग के होंगे।तथा जिनमे 200, 11 वीं एवं 200, 12 वीं के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श रूप में चयनित किया जाएगा ।

संख्याकिक विश्लेषण

अध्ययन में केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया जाएगा ।

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न चरों के निष्कर्षों की गणना एवं तुलना हेतु साख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, सह-सम्बन्ध गुणांक, बहुचरीय सह-सम्बन्ध, प्रतीपगमन समीकरण तथा प्रतिशत का ही प्रयोग किया जाएगा ।

शोध उपकरण

उपकरण की उपरोक्त विशेषताओं तथा उनके मौलिक तथ्यों को ध्यान में रखकर अनुसन्धानकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास, कुण्ठा, शैक्षिक उपलब्धि चर का मापन करने के लिए

1. डॉ० आर०पी० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत Social Maturity (Scale (SMS) का प्रयोग किया जाएगा।

2. आत्मविश्वास चर के मापन के लिए डॉ० रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित व मानकीकृत Agnihotri's Self Confidence Inventory (ASCI) का प्रयोग किया जाएगा।

3. कुण्ठा चर के मापन के लिए बी०एम० दीक्षित तथा डी०एन० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत Reactions to Frustration Scale (RFS) का प्रयोग कर प्राथमिक आंकड़े (Primary Data) संग्रहीत किया जाएगा।

4. शैक्षिक उपलब्धि हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (कक्षा- 11 एवं 12) के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को समंक के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों से सम्बन्धित अन्य आवश्यक सूचनाएं विद्यालय अभिलेखों से गौड़ आंकड़ों (Secondary Data) के रूप में प्राप्त किया जाएगा।

परिणाम एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त किए गए परिणामों का उद्देश्य एवं परिकल्पनावार विवरण एवं व्याख्या को प्रस्तुत शोध के अनुसार किया जाएगा ।

Scanned with OKEN Scanner

शोध प्रारूप

शोध प्रबंध मुख्यतः निम्न अध्यायों में विभक्त किया जायेगा।

प्रथम अध्याय:- प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय:- संबंधित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय:- अध्ययन विधि

चतुर्थ अध्याय:- प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय:- निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

Dweck, C. S. (2006). मानसिक सेटिंग के साथ बच्चों के सफलता का रहस्य. बच्चों के शैक्षिक प्रगति में मोटिवेशन और सोचने के तरीके.

Deci, E. L., & Ryan, R. M. (1985). स्वाधीनता सिद्धांत: स्व-मोटिवेशन, स्व-व्यक्ति और मुक्ति का नया अद्भुती दृष्टिकोण. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी और सोशल प्साइकोलॉजी, 41(4), 712-729.

Lazarus, R. S., & Folkman, S. (1984). स्ट्रेस, साहस और सहिष्णुता. न्यूयॉर्क: स्प्रिंगर.

Scanned with OKEN Scanner

Schunk, D. H., & Zimmerman, B. J. (2008). स्व-नियंत्रित शैक्षिक संग्रहन और क्रिया: शैक्षिक प्राक्टन. न्यू यॉर्क: रूटलेज.

Csikszentmihalyi, M. (1990). साहस की खोज: प्रमुखता, या समृद्धि का मानव अनुभव. कम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

Seligman, M. E. P. (2006). सुख और इसके अवगमन. प्रेंटिस हॉल प्रेस.

Carver, C. S., & Scheier, M. F. (1998). स्व-नियंत्रित कार्य: तंत्रिका अध्ययन. ओक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

Nolen-Hoeksema, S. (2012). औरतों के विचारों की तरफ: मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक प्रगति और समाज में भूमिका. वायड गार्डन पब्लिशिंग.

Lazarus, R. S. (1999). बच्चों के स्ट्रेस पर शोध: नए दिशानिर्देश. अमेरिकी नाने के बाद.

Deci, E. L., & Vallerand, R. J. (1991). स्व-अनुसंधान और प्रमुखता: अंतर्निहित मोटिवेशन की प्रक्रिया. शिक्षा प्रेस.

Eccles, J. S., & Roeser, R. W. (2011). किशोरावस्था के दौरान विकासात्मक संदर्भ के रूप में स्कूल. किशोरों पर अनुसंधान की जर्नल, 21(1), 225-241.

Bandura, A. (1997). स्व-कौशल: नियंत्रण का अभ्यास. फ्रीमैन.

Spielberger, C. D. (2010). वयस्कों के लिए स्थिति-गुण चिंतन सूची. माइंड गार्डन, इंक.

Erikson, E. H. (1968). पहचान: युवा और संकट. डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन और कंपनी.

Ryan, R. M., & Deci, E. L. (2000). स्व-निर्धारण सिद्धांत और आंतरिक प्रोत्साहन, सामाजिक विकास और भलाइ का सुन्दरन. अमेरिकी मनोविज्ञानी, 55(1), 68-78.

Pekrun, R. (2006). शैक्षिक अनुसंधान और प्रैक्टिस के लिए उपदान दिने वाली उपलब्धियों का नियंत्रण-मूल्य सिद्धांत; मान्यताएँ, अनुकरण और श्रेणी विद्यालय के लिए प्रासंगिकता. शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा, 18(4), 315-341.

Pintrich, P. R. (2000). स्व-नियंत्रित अध्ययन में लक्ष्य दिशा की भूमिका. स्व-नियंत्रण की हैंडबुक, 451-502.

Scanned with OKEN Scanner

American Psychological Association. (2013). मानसिक विकार और मानसिक विकार की चिकित्सा स्तातिस्टिकल मैनुअल (DSM-5). अमेरिकी मानसिक विशेषज्ञ पब्लिशिंग.

Zajacova, A., Lynch, S. M., & Espenshade, T. J. (2005). आध्यात्मिक सफलता में स्व-कौशल, तनाव, और शैक्षिक सफलता. उच्च शिक्षा में अनुसंधान, 46(6), 677-706.

Masten, A. S., & Coatsworth, J. D. (1998). सकारात्मक और अकारात्मक पर्यावरणों में योग्यता का विकास: सफल बच्चों पर अनुसंधान से सिखने के पाठ. अमेरिकी मनोविज्ञानी, 53(2), 205-220.

===========================

DR. M. AFAQUE HASHMI
Associate Professor
Dr. Zakir Husain Teachers Training College
Laheriasarai, Darbhanga, Bihar